ISSN (Online): 2350-0530
ISSN (Print): 2394-3629

International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
June 2020, Vol 8(06), 121 – 125
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v8.i6.2020.440

ANALYSIS OF AGRICULTURAL LAND USE AND EVALUATION OF IMPACT ON ECONOMIC DEVELOPMENT IN BIJNOR DISTRICT

बिजनौर जनपद में कृषि फसल वितरण का सामाजिक विकास पर प्रभाव एवं नियोजन की आवश्यकता

Dr. Rashmi Sharma Rawal *1✉, Naresh Kumar

[1] Associate Professor, RSMPG College, Dhampur, Bijnor, India
[2] Geography Department, RSMPG College, Dhampur, Bijnor, India

DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v8.i6.2020.440

Article Type: Research Article

Article Citation: Dr. Rashmi Sharma Rawal, and Naresh Kumar. (2020). ANALYSIS OF AGRICULTURAL LAND USE AND EVALUATION OF IMPACT ON ECONOMIC DEVELOPMENT IN BIJNOR DISTRICT. International Journal of Research - GRANTHAALAYAH, 8(6), 121 – 125. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v8.i6.2020.440

Received Date: 05 May 2020

Accepted Date: 22 June 2020

Keywords:
Agricultural Land
Evaluation
Economic Development
Bijnor District

ABSTRACT

English: From the beginning of human life, in the gradual development of its culture, various types of enterprises, businesses, economic activities and social development and its basic needs are obtained from the land. The study of the effects on human behavior and human functioning, the distance of the market from agricultural areas, market prices and agricultural production, demand of agricultural areas as well as the capacity of production, land production, density of cropland etc. were the questions that were studied Studies the impacts on agricultural land from a human social point of view. Agriculture is the most important aspect of the rural economy. Agriculture is the backbone of the sustenance and social development of all living communities. Along with the special production method and social ecologies of the area, the agricultural system and farming community, land ownership, availability of resources, size of holdings, agricultural land use along with social change of human environment has also seen changes in the agricultural state. Researchers by evaluating the effects of agricultural land use on social development in their area of study Bijnor district to maintain the quality of land under environmental balance through scientific techniques and green agricultural development for various long term agricultural needs. There is a need and the plains formed from the fertile land by the rivers Ramganga and Kho are important for agricultural land use and crop production..

Hindi: मानव आदिकाल से ही अपनी संस्कृति के क्रमिक विकास में विभिन्न प्रकार के उद्यम, व्यवसायों, आर्थिक क्रियाकलाप एवं सामाजिक विकास तथा अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भूमि से प्राप्त करता है। मानव व्यवहार एवं मानवीय कार्य प्रणाली पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन कृषि क्षेत्रों से बाजार की दूरी ,बाजार का भाव एवं कृषि उत्पादन, कृषि क्षेत्रों की माँग के साथ-साथ उत्पादन क्षमता भूमि उत्पादन की क्षमता फसल भूमि की सघनता आदि ऐसे प्रश्न रहे जिनका अध्ययन मानव सामाजिक दृष्टि कोण से कृषि भूमि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करता है। कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। कृषि समस्त जीव समुदाय का भरण-पोषण एवं सामाजिक विकास की रीढ़ होती है। फसलोत्पादन क्षेत्र विशेष उत्पादन विधि तथा वहाँ की सामाजिक पारिस्थितियों से कृषि व्यवस्था एवं कृषक समुदाय , भूमि स्वामित्व, संसाधनों की उपलब्धता, जोत का आकार, कृषि भूमि उपयोग को मानवीय वातावरण के सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ कृषि प्रदेश मे भी परिवर्तन देखा गया है। शोधार्थी अपने अध्ययन क्षेत्र बिजनौर जनपद में कृषि भूमि उपयोग का सामाजिक विकास पर प्रभावों का मूल्यांकन करके उसके भावी नियोजन की आवश्यकताओं को दीर्घकालीन विभिन्न कृषि भूमि उपयोग के वैज्ञानिक तकनीक एवं हरित कृषि विकास के माध्यम से वातावरण सन्तुलन के अन्तर्गत भूमि की गुणवत्ता को बनाये रखने की आवश्यकता है तथा रामगंगा और खो नदियों के द्वारा उपजाऊ भूमि से निर्मित मैदान कृषि भूमि उपयोग एवं फसल उत्पादन के लिये महत्वपूर्ण है।

© 2020 The Author(s). This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

बिजनौर जनपद में कृषि फसल वितरण का सामाजिक विकास पर प्रभाव एवं नियोजन की आवश्यकता

1. प्रस्तावना

1.1. अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक अध्ययन

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र बिजनौर जनपद उत्तर प्रदेश राज्य के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति 29^0 1′ उत्तरी अक्षांश से 29^0 47′ उत्तरी अक्षांश तथा 70^0 0′ पूर्वी देशान्तर से 78^0 57′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। गंगा नदी इसकी पश्चिमी सीमा निर्धारण करती है। जनपद की उत्तरी सीमा हिमालय की शिवालिक श्रेणियों की सीमा बनती है। जनपद के उत्तरी में हरिद्वार उ0 पू0 उद्यम सिंहनगर, दक्षिण में मुरादाबाद, पश्चिम में मेरठ, मुजफ्फरनगर जनपद स्थित है। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 4561 वर्ग किमी0 है जो उत्तर प्रदेश राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.91 प्रतिशत हैं। बिजनौर जनपद का कुल क्षेत्रफल का 96.52 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र है तथा 3.48 प्रतिशत नगरीय क्षेत्र है।जनपद की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 232 मीटर है तथा इसका सामान्य ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। बिजनौर जनपद प्रशासनिक रूप से पाँच तहसीलों नजीबाबाद, नगीना, बिजनौर, धामपुर और चान्दपुर में विभक्त किया गया है। यहाँ कुल 11 विकास खण्ड, 130 न्याय पंचायतें, 959 ग्राम पंचायतें, 2152 आबाद ग्राम, 897 गैर आबाद ग्राम, 6 वन ग्राम, 20 नगर समूह, 12 नगर पालिका परिषद एवं 6 नगर पंचायतें है। जनपद की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 3682910 है। जिसमें पुरूष जनसंख्या 1921327 तथा महिलाओं की जनसंख्या 1761583 है। जनपद का जनघनत्व 807 व्यक्ति वर्ग किमी0 है। साक्षरता 68.56 प्रतिशत है । लिंगानुपात 1000/923 हैं। गंगा, रामगंगा बान, करूला, गांगन, मालनी छोइया नदियों के द्वारा उर्बर एवं उपजाऊ मैदान निर्मित है। कृषि भूमि उपयोग के प्रमुख फसलें गेहूँ, चावल, गन्ना ,तिलहन एवं सब्जियाँ प्रमुख है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग का 85 प्रतिशत भाग सिंचित है। यातायात साधनों के द्वारा व्यापार उद्योग कारखानों एवं महानगरों से जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण जनपद है।

बिजनौर जनपद का विकासखण्डवार मानचित्र

बिजनौर जनपद में क्रियात्मक जोतों का आकार वर्गान्तर (विकासखण्डवार) 2017-18

क्र0 सं0	विकासखण्ड	0.50 से कम		0.50–1.0		1.0–2.0		2.0–4.0		4.0–10.0		10.0 से अधिक		कुल जोत आकार	
		स0	हे0	स0	हे0	स0	हे0	स0	हे0	स0	हे0	स0	हे0	स0	हे0
1	नजीबाबाद	12722	3802	10648	7361	6622	9370	3436	9229	887	4637	42	1186	34357	35592
2	किरतपुर	9133	2657	5064	3241	3790	5506	2246	5866	458	2393	14	190	20705	19853
3	मोहम्मदपुर देवमल	11256	3094	7051	4902	6112	10505	2670	7498	648	3571	35	572	27772	30142
4	हल्दौरखसि झालू	16209	4157	7732	5184	5537	8311	2913	7909	724	3851	32	546	33147	29958
5	कोतवाली	18866	4648	11534	9725	8472	10778	3571	9203	760	3950	55	976	43258	39280
6	अफजलपुर	12442	9758	10452	7491	6502	9048	3022	8378	846	4038	39	1255	33303	35368
7	नहटौर	10112	2438	6482	4594	4360	6229	2364	6415	236	1226	8	124	23562	21026
8	अल्हैपुर	12448	4045	6592	5128	6022	9222	1730	4957	403	1978	8	134	27203	27764
9	बूढ़नपुर स्योहारा	14803	4635	8390	6263	6146	9490	2407	6660	388	1927	9	144	32143	29119
10	जलीलपुर	12155	3706	7706	9126	6893	9830	3576	10009	912	4938	27	326	31269	33935
11	नुरपुर	13096	5152	7335	4820	6366	9091	3323	9618	692	3510	23	239	30835	32460
	ग्रामीण योग	143242	43499	88986	63835	56822	97680	31258	85742	6954	36019	292	5722	337554	332497

	नगरीय योग	7841	1780	4150	3358	2225	3422	1127	3362	190	995	11	183	15544	13100
	कुल जनपद योग	151083	45379	93136	67193	69047	101102	32385	89104	7144	37014	303	5905	353098	345597

स्रोत

1) अधि0 अधि0 सिंचाई खण्ड बिजनौर।
2) अधि0 अभि0 नलकूप खण्ड बिजनौर।
3) सहा0 अभि0 राजकीय लघु0 सिंचाई बिजनौर।
4) अर्थ एवं संख्या प्रभाग बिजनौर।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग के अन्तर्गत कृषि तकनीकी ग्राह्यता एवं जनचेतना, जोतों का आकार एवं चकबन्दी सामाजिक सुविधाओं पर प्रभाव , कृषकों के जीवन स्तर पर प्रभाव, सामाजिक रूपान्तरण एवं प्रादेशिक विषमता को महत्वपूर्ण माना गया है। जनपद बिजनौर में कृषि भूमि उपयोग का सामाजिक विकास के पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद बिजनौर में कृषि भूमि उपयोग का क्रियात्मक जोतों का आकार विभिन्न प्रखण्डों में 0.50 हे0 भूमि से कम जोतों के प्रखण्ड है। जिसमें कुल संख्या 151083 है, जबकि क्षेत्रफल के 45279 हे0 भूमि के जोतों का आकार है। उच्चतम स्तर के प्रखण्डों में व्यक्तियों की संख्या हल्दौर खारीझालू 16209, कोतवाली 18866, बूढ़नपुर स्योहारा 14803 , नूरपुर 13096, नजीबाबाद 12722 तथा न्यूनतम स्तर पर किरतपुर 9132 , नहतौर 10112, मोहम्मदपुर देवमल 11253, अफजलपुर 12442 है। क्ष ेत्रफल के आधार पर उच्चतम स्तर के विकासखण्ड में अफजलपुर 5158 हे0, नूरपुर 5152 हे0, कोतवाली 4648 हे0, बूढ़नपुर स्योहारा 4635 हे0, हल्दौर खारी झालू 4152 हे0, तथा न्यूनतम नहतौर 2438 हे0, किरतपुर 2652 हे0 न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड हैं। 0.50 से 1.0 हे0 भूमि के प्रखण्ड उच्चतम स्तर पर व्यक्तियों की संख्या कोतवाली 11534 , नजीबाबाद 10648 , अफजलपुर 10452, है तथा किरतपुर 11534, मोहम्मदपुर 7051 तथा विभिन्न प्रखण्ड में व्यक्तियों के क्षेत्रफल हे0 में उच्चतम स्तर पर कोतवाली 9725 हे0, जलीलपुर 9126 हे0, नजीबाबाद 7361 हे0 तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड किरतपुर 3241 हे0 , नहतौर 4594 हे0 के प्रखण्ड हैं। 109 हे0 से 2.0 हे0 भूमि पर व्यक्तियों की संख्या उच्चतम स्तर के प्रखण्ड कोतवाली 8472 , जलीलपुर 6893, तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड किरतपुर 3790, नहतौर 4360 है। उच्चतम क्षेत्रफल के प्रखण्ड अफजलपुर 10778 हे. ,, मोहम्मदपुर 10505 हे0, जलीलपुर 9830 हे0 तथा न्यूनतम स्तर पर किरतपुर 5506 हे0, नहतौर 6229 हे0, के प्रखण्ड है। 2.0 हे0 से 4.0 हे0 के व्यक्तियों की संख्या उच्चतम स्तर पर जलीलपुर 3576 , कोतवाली 3571 तथा न्यूनतम स्तर बूढ़नपुर स्योहारा 1730 के प्रमुख है। क्षेत्रफल के आधार नुरपुर 9618 हे0, जलीलाबाद 10009 हे0, उच्चतम स्तर के प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड नहतौर 4957 हे0 है। 4.0 हे0 से 10.0 हे0 भूमि के व्यक्तियों की संख्या उच्चतम स्तर के प्रखण्ड -जलीलपुर 912, नजीबाबाद 887, अफजलपुर 846 तथा न्यूनतम स्तर पर नहतौर 236 हे। 10.0 हे0 से अधिक व्यक्तियों की संख्या -अफजलपुर 55, मोहम्मदपुर 35 तथा न्यूनतम स्तर पर नहतौर 8, अल्हैपुर 8, बूढ़नपुर स्योहारा 9 के प्रखण्ड है।

जनपद के 10.0 से अधिक विकासखण्डों के क्षेत्रफल के आधार पर प्रखण्डों में अफजलपुर 1255 हे0, नजीबाबाद 1186 हे0, कोतवाली 976 हे0, मोहम्मदखारी देवमल 572 हे0, हल्दौर खारी झालू 546 हे0, उच्चतम स्तर के प्रमुख है। न्यूनतम स्तर पर नहतौर 124 हे0, अल्हैपर 134 हे0, बूढ़नपुर 144 हे0, किरतपुर 190 हे0, नुरपुर 239 हे0 के प्रखण्ड है। कुल जोत आकार प्रखण्डों की संख्या के आधार पर कोतवाली 43258 , नजीबाबाद 34357 , अफजलपुर 33303 , बूढ़नपुर स्योहारा 32143, हल्दोर खारी झालू 33147 है। न्यूनतम स्तर किरतपुर 20705, नहतौर 23562 के प्रखण्ड है। कुल जोतों का आकार क्षेत्रफल के आधार पर विभिन्न प्रखण्डों में उच्चतम स्तर पर कोतवाली 39280 हे0 क्षेत्रफल , नजीबाबाद 35592 हे0, जलीलपुर 33935 हे0, क्षेत्रफल के प्रखण्ड है। किरतपुर 19853 हे0, नहतौर 21026 हे0 भूमि के प्रखण्ड है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग का कुल व्यक्तियों के जोतों की संख्या 353098 है तथा कुल जोतों का आकार क्षेत्रफल की दृष्टि से 345597 हे0 भूमि उपलब्ध है। अध्ययन क्षेत्र जनपद बिजनौर में फसल वितरण का प्रतिरूप विकासखण्डवार 2016-17 की गणना के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में 323198 हे0 भूमि है तथा नगरीय क्षेत्रों में 9130 हे0 भूमि है। कुल शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 332228 हे0 है तथा एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल ग्रामीण क्षेत्रों में 77247 हे0 तथा नगरीय क्षेत्रों में 1211 हे0, भूमि है। कुल कृषि भूमि 77458 हे0 है। सकल बोया गया क्षेत्रफल रबी फसल ग्रामीण एवं नगरीय दोनों का योग 410746 हे0 तथा खरीफ फसल 215817 हे0, जायद फसल के लिये 9255 हे0 , कृषि भूमि उपलब्ध है। गन्ने की फसल के कृषि भूमि 2053 हे0 भूमि है। शुद्ध सिंचित भूमि ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों की भूमि 325356 हे0 है। सकल सिंचित क्षेत्रफल ग्रामीण एवं नगरीय भूमि 388893 हे0 है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न प्रखण्डों में कृषि भूमि उपयोग का प्रतिरूप उच्चतम शुद्ध बोया गया क्षेत्र के प्रखण्ड कोतवाली 37945 हे0 मोहम्मदपुरी देवमल 35964 हे0, नजीबाबाद 35647 हे0, जलीलपुर 32426 हे0 के प्रखण्ड है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड अल्हैपुर 18740 हे0, बूढ़नपुर स्योहारा 21526 हे0, किरतपुर 22381 हे0 है। एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल मोहम्मदपुर देवमल 11475 हे0, नजीबाबाद 11606 हे0 ,बूढ़नपुर स्योहारा 8027 हे0 तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड नूरपुर 3050 हे0, हल्दौर खारी झालू 4280 हे0, किरतपुर 5289 हे0, के प्रखण्ड है। कुल रबी, खरीफ, जायद की फसलों के लिए कृषि भूमि उपयोग के प्रखण्ड मोहम्मद देवमल 47439 हे0, नजीबाबाद 47253 हे0, कोतवाली 46140 हे0, जलीलपुर 39065 हे0, उच्चतम स्तर के प्रखण्ड हे तथा अल्हैपुर 24071 हे0, किरतपुर 27670 हे0, बूढ़नपुर स्योहारा 29553 हे0, न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड है। गन्ने की फसल के लिये कृषि भूमि उपयोग के प्रखण्ड जलीलपुर 395 हे0, नजीबाबाद 387 हे0, हल्दौर खारी झालू 298 हे0, अफजलपुर 06 हे0, तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड है।

बिजनौर जनपद में कृषि फसल वितरण का सामाजिक विकास पर प्रभाव एवं नियोजन की आवश्यकता

बिजनौर जनपद में फसल वितरण का प्रतिरूप विकासखण्डवार हे0 में 2016-17

क्र0 सं0	विकासखण्ड	शुद्ध बोया गया क्षे0	एक बार से अधिक बोया गया क्षे0	सकल बोया गया क्षेत्रफल				गन्ने के लिए	शुद्ध सिंचित क्षे0	सकल सिंचित क्षे0
				कुल	रबी	खरीफ	जायद	गन्ने के लिए	शुद्ध सिंचित क्षे0	सकल सिंचित क्षे0
1	नजीबाबाद	35647	11606	47253	10020	31180	965	387	16672	46312
2	किरतपुर	22381	5289	27670	9068	19195	558	86	22840	27650
3	मोहम्मदपुर देवमल	35964	11475	47439	8425	32329	848	171	37645	46419
4	हल्दौरखसि झालू	33819	4280	38099	9920	23299	889	298	35355	40657
5	कोतवाली	37945	8195	46140	11264	39265	1095	145	37626	51140
6	अफजलपुर	30221	7779	38000	10631	22723	978	306	26046	37500
7	नहटौर	18740	5331	24071	9780	18317	553	82	15771	21817
8	अल्हैपुर	26299	5576	31875	8570	22720	721	92	21095	23658
9	बूढ़नपुर स्योहारा	21526	8027	29553	9589	19536	629	60	1792	25311
10	जलीलपुर	32426	6639	39065	9059	26180	989	395	24510	32590
11	नुरपुर	28230	3050	31280	8168	25810	824	31	22532	28915
	ग्रामीण योग	323198	77247	400445	104494	280554	9049	2053	283190	381969
	नगरीय योग	9130	1211	10341	11323	3107	206	0	42166	6924
	कुल जनपद योग	332328	78458	410786	115817	283661	9255	2053	325356	388893

स्रोत

1) भूलेख अधिकारी बिजनौर जनपद
2) जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद बिजनौर 2015-16

नूरपुर 31 हे0, बूढ़नपुर 60 हे0, किरतपुर 86 हे0, नहतौर 82 हे0, अल्हैपुर 92 हे0, भूमि है। शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल मोहम्मददेवमल 37645 हे0, कोतवाली 37626 हे0, हल्दौर खारीझालू 35355 हे0 भूमि है तथा न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड अल्हैपुर 15771 हे0, नजीबाबाद 16672 हे0, के प्रखण्ड है। सकल सिंचित क्षेत्रफल उच्चतम स्तर के कोतवाली 51140 हे0, मोहम्मददेवमल 46419 हे0, नजीबाबाद 46312 हे0, न्यूनतम स्तर के प्रखण्ड अल्हैपुर 21817 हे0, बूढ़नपुर स्योहारा 23658 हे0 भूमि है। इस प्रकार शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन क्षेत्र में आॅकड़ों को प्रस्तुत किया है।

2. सामाजिक विकास पर प्रभाव

कृषि विकास प्राकृतिक कारकों के साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों से भी प्रभावित होती है। स्टैम्प न भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों में सामाजिक ,आर्थिक कारकों का विशेष महत्व प्रदान किया है। सामाजिक मानवीय कारकों को प्राथमिकता दी है। सामाजिक व्यवसाओं में विभिन्न धर्मों के जातिगत, विशेषताओं, रीति-रिवाजों, आदतों तौर-तरीकों, खेती के आकार-प्रकार , काश्तकारी , भूस्वामित्व, कृषि पद्धतियों एवं कृषि स्वरूप आदि प्रभावित करता है। अध्ययन क्षेत्र बिजनौर जनपद के विभिन्न प्रखण्डों में जोतों का आकार तथा भूमि विभाजन से बढ़ता अनियति कृषि भूमि दिन-प्रतिदिन छोटे खण्डों में विभाजित होते है। जिनका नियोजन करना सम्भव नहीं है। ये सामाजिक प्रभाव के कारण कृषि भूमि का उपयोग का प्रतिरूप बदलता जा रहा है। इसके बदलते स्वरूप के प्रमुख कारण सामाजिक विकास माना जा रहा है। मानव समाज के बदलते स्वरूप और आवश्यकता के कारण अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग का स्वरूप सामाजिक विकास आज एक जटिल समस्या के रूप में मानव के सामने परिलक्षित जैसे भूजल दोहन, आवास , वन-विनाश, भू क्षरण, मृदा अपरदन , भूमि की गुणवत्ता में कमी, मानव द्वारा भूमि अति दोहन, पर्यावरणीय समस्या, जल प्रदूषण तकनीकी, औद्योगिकी का प्रभाव, जैविक उर्वरकों की कमी आदि कारण हैं।

3. कृषि भूमि उपयोग का भावी नियोजन की आवश्यकता

अध्ययन क्षेत्र जनपद बिजनौर में कृषि भूमि उपयोग का भावी नियोजन की आवश्यकता एवं इच्छाओं के अनुरूप भूमि का उपयोग करते है। किसी क्षेत्र का भूमि वहाँ भी आर्थिक, सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सम्पन्न किया जा रहा हो और प्राकृतिक पर्यावरण का प्रभाव कम हो उसे भूमि संसाधन उपयोग की संज्ञा दी जाती है। बारलो के अनुसार ''भूमि संसाधन भूमि समस्या और उसके नियोजन की विवेचना की वह धुरी है जिसके पाँच बिन्दु है-

1) आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न समाज की स्थापना
2) भूमि संसाधन उपयोग की अवस्था तथा अनुकूलतम उपयोग का निर्धारण।

3) विभिन्न लागत कारकों (श्रम और पूंजी आदि) के अनुपात में भूमि से अधिकतम लाभ की योजना।
4) फसलगत भूमि के उपयोग में माँग के आधार पर लाभदायक सामंजस्य तथा परिवर्तन का सुझाव ।
5) किसी क्षेत्र के लिये अनुकूलतम एवं बहुउद्देश्यीय भूमि उपयोग का विवेचन करना तथा उसके सुझावों को क्षेत्रीय अंगीकरण हेतु समन्वित करना । ''

इस प्रकार शोधार्थी द्वारा बिजनौर जनपद में कृषि भूमि उपयोग का सामाजिक विकास पर प्रभावों की विवेचना है। कृषि भूमि उपयोग का नियोजन भावी योजनाओं के माध्यम से भूमि की गुणवत्ता को बनाये रखने की आवश्यकता महत्वपूर्ण है, क्यूँकि भूमि से ही सम्पूर्ण जगत के विकास के आयाम होते है। कृषि भूमि उपयोग भूमि की संरचना एवं विकास के फलस्वरूप विकसित होते हैं तथा समाज तथा राष्ट्र भूमि उपयोग के नियोजन से ही भूमि की उपयोगिता का मूल्य ऑका जा सकता है।

SOURCES OF FUNDING

None.

CONFLICT OF INTEREST

None.

ACKNOWLEDGMENT

None.

REFERENCES

[1] तिवारी आर0सी0 एवं सिंह बी0एन0: कृषि भूगोल प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद 2000 ।
[2] मिश्रा विनीत: कृषि अर्थशास्त्र भारत भारती प्रकाशन एण्ड कम्पनी मेरठ-1996-97 ।
[3] वेद प्रकाश अरोड़ा: कृषि का ऊँचा उठता ग्राम योजना मासिक अंक: जनवरी 2011 ।
[4] डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आफ बिजनौर 1981 ।
[5] जिला अर्थ एवं संख्या प्रभाग द्वारा प्रकाशित विकास पुस्तिका जनपद बिजनौर।
[6] जिला सांख्यिकीय पत्रिका जनपद बिजनौर।
[7] रहमान ए0:भारत मे विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी भागीरथी सेवा संस्थान गाजियाबाद 1986 ।
[8] मेहता बी0शर्मा एवं सैनी एन0पी0: कृषि अर्थशास्त्र. नेशनल पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली।
[9] सिंही जगदीश: सिंह एन0के0: भारत एवं समीपवर्ती देश: ज्ञानोदय प्रकाशन गोरखपुर 1989 ।
[10] अमरेन्द्र कुमार राय: किसानों का बजट योजना मासिक पत्रिका मार्च 2010 ।
[11] समाचार पत्र, पत्रिका जनगणना कार्यालय 2011 ।